लिंग

शब्द के जिस रुप से व्यक्ति या वस्तु की जाती का बोध हो उसे 'लिंग' कहते है ।

जैसे: लडका, नाना, और घोडा शब्द पुरुष जाति के लिए प्रयुक्त होते हैं।

लडकी, नानी, और घोडी शब्द स्त्री जाति के लिए प्रयुक्त होते हैं ।

हिन्दी में दो लिंग हैं. **१. पुंलिंग**

२. स्त्रीलिंग

लिंग निर्णय:

प्राणियों के लिंग निर्णय में कोई कठिनाई नही है । जो शब्द पुरुष या नर जाति का बोध कराते है, वे पुंलिंग हैं।

जो शब्द स्त्री जाति या मादा का बोध कराते है वे स्त्री लिंग है।

पुंलिंग:- मामा, कुत्ता, बैल, मोर, हाथी आदि

स्त्रीलिंग:- मामी, कुतिया, गाय, मोरनी, हाथिनी आदि.

लिंग की पहचान के कुछ नियम:-

१. प्राणियों के समुदाय को बताने वाली ये संज्ञायें पुंलिंग है।

जैसे :- समुदाय, समूह, परिवार, समाज, मण्डल, झुण्ड, ठट्ठ, कुटुम्ब, दल, संघ, निगम.

२. प्राणियों के समूह को बताने वाली ये संज्ञाये स्त्रीलिंग है ।

जैसे:- समिति, मण्डली, कमेटी, सेना, फौज, पुलिस, सभा, जनता, भीड, सरकार, टोली आदि ।

३. हिन्दी में कुछ प्राणिवाचक शब्द केवल स्त्री लिंग में प्रयुक्त होते हैं।

उदाहरण:- सेना, सती, सौत, पुलिस, सन्तति (सन्तान) सुहागिन, स्वारी, धाय, आदि.

४. शरीर के ये अंग पुंलिंग है ।

उदाहरण:- बाल (केश), नाखून, कान, हाथ, पैर मुँह, ओष्ठ, अंगूठा, मस्तक, सिर, घुटना आदि ।

५. शरीर के ये अंग स्त्री लिंग है ।

उदाहरण:- जीभ, एडी, आँख, कलाई, जाँघ, उँगली-ठोडी, टाँग, चोटी, वेणी, भौहं. ।

* **कुछ प्राणिवाचक शब्द सदा पुंलिंग होते हैं ।**

जैसे:- गरुड मच्छर, खरगोश, चीता, खटमल, बिच्छू पक्षी, गौंडा, कछुआ, बाज, आदि।

* **इन में स्त्रीलिंग बनाने के लिए 'मादा' शब्द पहले जोड़ा जाता है।**

जैसे:- मदा खरगोश

* **कुछ प्राणि वाचक शब्द नित्य स्त्रीलिंग होते हैं ।**

जैसे :- तितली, दीमक, कोयल, मकड़ी, मक्खी, मैना, गिलहरी, मछली इत्यादि ।

* **इन में पुंलिंग बनाने के लिए 'नर' शब्द पहले जोडा जाता है ।**

जैसेः- नर मक्खी

* **व्याकरण की दृष्टि से लिंग - कुछ अप्राणिवाचक शब्दों के पुंलिंग में भिन्न रुप है, स्त्री लिंग में भिन्न।**

जैसेः- पुत्र (पुं) ईख (स्त्री) ग्रन्थ (पुं) पुस्तक (स्त्री) .

* **पर्वतों के नाम प्रायः पुंलिंग होते हैं ।**

जैसे :- हिमालय, आल्पस, विन्ध्याचल, सतपुड़ा, पूर्वी घाट, पश्चिमी घाट इत्यादि ।

* **पर्वत के कई अंग स्त्री लिंग होते हैं।**

<u>उदाहरणः-</u> पहाडी, तराई, अधित्यका, उत्पत्यका, चोटी इत्यादि।

* **काल सम्बन्धी ये नाम पुंलिंग हैं।**

<u>उहारणः-</u> काल, समय, वक्त, पल, लम्हा, सैकिण्ड मिनट, घण्टा, वर्ष, दिन, सप्ताह, हक्ता, पखवाडा पक्ष, त्रिका, युग, कल्प, दिनाङ्क, मुहूर्त युगान्त, युग आदि.

* **काल सम्बन्धी ये नाम स्त्री पुंलिंग हैं।**

उदाः- रात, घडी, सायत, तारीख, तिथि, शताब्दी, सदी.

* **हिन्दी दिना, तथा मासों के नाम पुंलिंग होते है।**

उदाः- रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, शुक्रवार शनिवार ।

चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, विभागों आदि के ये नाम पुंलिंग होते है ।

* **देशों एवं जल स्थल विभागों आदि के ये नाम पुंलिंग होते है ।**

उदाः- ब्रह्माण्ड, उपमहाद्वीप, द्वीप, देश, टापू, भूगोल भूमण्डल, भूभाग, यूरोप, एशिया, आप्रीका, अमरीक, भारत, रूस, चीना, जापान, रेगिस्तान, नखलिस्तान, महासागर, झरना, सरोवर, तालाब,नाल, आकाश पाताल, प्रान्त, वन, नगल, कस्वा, ग्राम, खेत, भवन, घर, मकान, महल, क्षेत्र, इलाका, आश्रम, आश्रय, इत्यादि।

* **देशों, स्थानों, जल विभागों, के ये नाम स्त्री लिंग होते हैं।**

उदाः- पृथ्वी, जमीन, भूमि, धरती, खाडी, झील, नदी, नहर, स्थली, अटवी, घाटी, बस्ती, कालोंनी, पुरी , नगरी, कुटिया, झोंपडी, आदि।

* **ग्रह-नक्षत्रों के ये नाम पुंलिंग है।**

उदाः- सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र, शनी, राहु, केतु, ध्रुवतराता, सप्तर्षि, उल्का आदि।

* **ग्रह-नक्षत्रों के ये नाम स्त्री लिंग है ।**

उदाः- पृथ्वी, अरुन्धती, कृत्तिका, रोहिणी, भरणी, आकाश-गंगा, आदि।

* **मोटी, भारी- भरकम, भद्दी, ऊबड-खाबडः वस्तओं के नाम प्रायः पुंलिंग होते हैं।**

उदाः- शहतीर, गट्ठर, खड्डा, टीला, देर आदि।

* **संस्कृत के अ, इ, इ, अन्त वाले पुं. तथा नपुं. शब्द हिन्दी में प्रायः पुंलिंग होते है ।**

उदाः- जग, जगत्, संसार, शरीर, जीवन, तन, मन, धन जन, गीत, पद्य, गद्य, साहित्य, छन्द, जल, पल, बल, धर्म, कर्म. ज्ञान, विज्ञान, कवि, ऋषि, मुनि, साधु, जन्तु, अपवाद. प्रलय, विलय, आयु, ऋतु, रुचि वस्त- ये स्त्री लिंग हैं।

*** पतली, हल्की, सुन्दर तथा कोमल (नाजुक) वस्तुओं के नाम प्रायः स्त्री लिंग होते है ।**

उधाः छडी, डाली, गठरी, तकली, शिला, राशि, पंखडी आदि।

*** जिन भाववाचक संज्ञाओं के अन्त में ना आव, पन, आपा, त्व, प्रत्यय, जुडो हो वे प्रायः पुंलिंग होती है ।**

ना - पाना, सोना, रोना, गाना, नहाना, नाचना

भाव- दुराव, छिपाव, सजाव, बनाव, लगाव

पन - लड़कपन, छुटवन, बचपन, अपनापन, बडप्पन

आपा- रँडापा, बुढापा, मोटापा

त्व - मनुजत्व (मनुष्यत्व), देवत्व, नंरत्व, महत्व, तत्व,

*** जिन संज्ञाओं के अन्त में त्र, न, ण, ख, ज तथा आर, आयु, आस हों - पुंलिंग होती है।**

जैसेः- त्र - मित्र, पत्र, चित्र

न-मदन, सदन, क्रन्दन, रदन, वदन, पालन ।

अपवाद - लगन, चु भन, थकन, धड़कन । ये स्त्री लिंग है ।

णः पोषण, जागरण, व्याकरण, मरण, श्रवण, हरण

ख : सुख, मुख, दुःख, नख, रुख ।

अपवाद - चीख, सीख, भीख - स्त्री लिंग है ।

ज - सरोज (कमल) उरोज (स्तन), मनोज, भोज, अनाज, व्याज, काज, जहाज, ताज ।

अपवाद - लाज, खाज, छाज, खोज, मौज, स्त्री लिंग है ।

आर - प्रकार, प्रचार, (फूलों का) हार, संहार, श्रृंगार, द्वार, आहार, व्यवहार, विचार, संचार, विस्तार, प्यार, अधिकार, प्रहार ।

अपवाद-हार (पराजय) फुंकार, फूत्कार, पुकार, बोछार-ये स्त्री लिंग हैं।

आय - न्याय, व्यवसाय, अध्यवसाय, अध्याय, उपाध्याय ।

अपवाद - आय (आमदनी) स्त्री लिंग है ।

आस - विश्वास, त्रास, अभ्यास, न्यास, विन्यास, सन्यास, उल्लास।

अपवाद - प्यास, आस, कपास, सास, घास, बकरास, साँस - ये स्त्री लिंग हैं ।

* **नदियों के नाम स्त्री लिंग हैं ।**

<u>उदाहरणः</u> गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, गोमती, गंडक तुंगभद्रा, कोसी, नर्मदा ।

<u>अपवादः-</u> ब्रह्मपुत्र, सिंधु, सतलुज, व्यास, जेहलमद्, चिनवा- इनका पुंलिंग में प्रयोग होता है । नदी शब्द जोडने पर ये भी स्त्री लिंग है ।

* **इन बर्तनों के नाम पुंलिंग है ।**

<u>उदाहरणः-</u> टब, पतीला, देग, कटोरा, चम्मज, चूल्हा, चमचा, तवा, कुकर, स्टोव, गैस, थाल, कप, प्याला ।

* **इन शब्दों के नाम स्त्री लिंग है ।**

उदाहरणः- देगची, बाल्टी, पतीली, कटोरी, आँगीठी छलनी, कछडी इत्यादि ।

कुछ वृक्षों तथा फलों के नाम पुंलिंग है।

अ. वट, अनार, अशोक, शीराम, ताड़, पीपल, आबनूस, आम नारियल, सागवान, देवदारु आदि.

आ. कटहल, फणस, फालसा, शहतूत इत्यादि ।

* **कुछ पेडों तथा फलों के नाम स्त्री लिंग है ।**

उदाहरणः- बेल (लता), वल्लरी, जामुन, नाशपाती, लीची, खजूर, ककडी, बीही, मौसंवी अंजीर इत्यादि ।

* **धातुओं के नाम प्रायः पुंलिंग होते हैं।**

उदाहरणः- सोना, स्वर्ण, ताम्र, लोह, लौहसार, सीसा, एल्यूमीनियम, राँगा, जस्ता, टीन, काँसा, पीतल, प्लैटिनम, यूरेनियम इत्यादि।

अपवादः- मणि - यह स्त्री स्त्री लिंग हे ।

* **द्रवों की ये नाम स्त्री लिंग होते हैं ।**

उदाहरणः- मद्य, मद, शराब, सुरा, चाय, कॉफी, लस्सी छाछ, शिकंजवी, स्याही, जलधारा ।

* **द्रवों के ये नाम पुंलिंग होते हैं ।**

उदाहरणः- पानी, नीर, सलिल, घी, तेल, शरबत, सोडा, दूधमट्ठा.

* **किराने की ये चीजें पुंलिंग होती है ।**

उदाहरणः- गरम मसाला, धनिया, जीरा, पुदीना, नमक, अमचूर, अनारदाना, खाने का सोडा अदरक आदि ।

* **किराने की ये चीजें स्त्रीलिंग होती हैं ।**

उदा:- लैंग, दाल चीनी, हल्दी, हींग, सुपारी, हलायची, मिर्च, कलौंजी, अजवायन, सौप आदि ।

* **भोजन पदार्थों में यें पुंलिंग है ।**

उदारहण:- पराँठा, पूडा, समोसा, चावल, भात, पुलाव, रायता, हलवा, गोलगप्पे, लड्डू, मोहनभोग, कलाकन्द, रसगुल्ले, गुलाबजामुन, पेडा, केक, भठूरा आदि ।

* **भोजन-पदार्थों में ये स्त्री लिंग हैं।**

उदा:- रोटी, पूरी, जलेबी, मरती, कचौरी, खीर, दाल सब्जी, चपाती, पकौडी, तरकारी, भांजी, खिचड़ी, रसा, कांजी, आइसक्रीम, रसमलाई, बरफी, मठरी, आदि।

* **इन ग्राहनों के नाम पुंलिंग हैं ।**

उदाहरण:- कंगन, कड़ा, झूमर, काँटा, हार, गजरा.

* **इन ग्रहनों को नाम स्त्री लिंग है ।**

उदारहण:- नथ, तीली, माला, चीडी, बिंदिया, कंठी, अंगूठी, टिकली, आदि।

* **कुछ वस्त्रों के नाम पुंलिंग है।**

उदाहरण:- कोट, पाजामा, कुर्ता, सूट, कच्छा, जाँधिया, टोप, दुपट्टा, मोजा, रुमाल, जम्पर, गाऊन, घाघरा आदि ।

* **कुछ वस्त्रों के नाम स्त्री लिंग है ।**

उदाहरण:- कमीज, पतनूल, पैंट, साडी, छोती, अँगिया, चुनरी, पगडी, बनियान, निक्कर, टाई, बंडी, सोली, टोपी आदि।

* **'ख' आई, हट, वट, ता अन्तवाली संज्ञायों स्त्री लिंग होती है।**

<u>उदाहरणः-</u> ख - भीख, राख, चीख, सीख.

आई - भलाई, बुराई, गहराई, चतुराई, लिखाई

हट - आहट, मुस्कराहट, गुर्राहट, झल्लाहट

वट - बनावट, सजावट, रुकावट.

ता - स्वतंत्रता, परन्त्रता, मित्रता, शत्रुता, लघुता, कटुता, मधुरता, रम्यता, मनोहरता, तीव्रता, कोमलता।

* **भाषाओं तथा बोलियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं।**

जैसे : हिन्दी, संस्कृत, मराठी, बंगला, गुजराती, तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलायम, उर्दू आदि।

<u>अरबी-फारसी शब्दः-</u> हिन्दी में प्रायः उसी लिंग में प्रयुक्त होते हैं। जिस लिंग में उनका मूल भाषा में प्रयोग होता है ।

जैसेः- २ अन्त में अब, आन, आर वाले शब्द प्रायः पुंलिंग होता है।

आब - जनाब, कबाब, जवाब,

आन - इनसान, मेहमान, मेजवान, मकान ।

आर - अखबार, बाजार, दुकानदार।

* **अरबी -**फारसी के आ, ई, श, त, अन्त ाले शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते है।

उदाहरणः- आ - दवा, हवा, फिजा. दुनिया ।

ई - गरमी, सरदी, अमीरी, गरीबी, लाचारी

श - लाश, तलाश, बारिश

त - अदालत, हरारत, अदावत, शराफत, किस्मता

अपवाद- मजा, वक्त, खत, होश, जोश ये पुंलिंग हैं ।

* **जिन संज्ञा शब्दों के अन्त में आ, इ, उ, ऊ, हों वे संज्ञायें प्रायः स्त्री लिंग होती हैं ।**

जैसेः- श्रकारान्त - पूजा, परीक्षा, माला, दया आज्ञा, प्रार्थना, माया ।

उदारहणः- कुत्ता, बूढा, कुर्ता, भुर्ता, पिता, लडका, लाला ।

* **इकारान्तः-** रुचि, राशि, कान्ति, नीति, ज्योति, क्रान्ति, छवि, राशि, मति मुक्ति, भुक्ति, प्रीति स्त्री लिंग है ।

अपवादः- मुनि, कवि, हरि, यति, रवि, शशि पुलिंग है ।

* **ईकारान्तः-** खुदाई, गहराई, लडाई, नदी, गठरी, सगाई, चालाकी, चिट्ठी, मिठाई, बस्ती, लडकी लकडी फली इत्यादि स्त्री लिंग है ।

अपवादः- मोती, पानी, स्वामी, घी पुंलिंग है।

* **उकारान्तः-**वायु, वस्तु, ऋतु, मृत्यु-ये स्त्री लिंग है ।

अपवादः- गुरु, साधु, मधु, शहद, - ये पुंलिंग है ।

ऊकारान्तः- लू, बालू, वधू, झडू, तराजू, ये स्त्री लिंग है।

अपवादः- आलू, काजू, भालू, कद्दू, आंसू च्ये पुंलिंग है ।

* **तिथियों के नाम स्त्री लिंग होते हैं।**

जैसेः- प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी.
अमावस्या, पूर्णिमा आदि ।

* **त जिनके अन्त में हो वे संज्ञाये प्रायः स्त्री लिंग होती है ।**

जैसेः- बात, रात छर, लात, गत, इत्यादि ।

अपवादः- गीत, भात, व्रत.

पुंलिंग से स्त्रीलिगं बनाने के नियम

* अ, आ, अन्त वाले शब्दों के अन्तिम स्वर को ई करके -

जैसे : दास-दासी, पुत्र-पुत्री, देव-देवी, चाचा-चाची.

* कुछ शब्दों के अन्तिम अ, आ, की इया करके तथा यदि प्रथम स्वर दीर्घ हो तो उसे. हस्व करके -

उदाहरणः- चूहा - चूहिया, बेटा - बेटिया.

* व्यापारवाचक तथा नाती और ईसाई शब्दों के अन्तिम स्वर को 'इन' करके-

उदाहरणः- जुलाहा - जुलाहिन, लुहार-लुहारिन. नाती - नातिन, ईसाई-ईसाइन.

* पशु - पुक्षियों तथा मनुष्य की उपजातियों मं, शब्द के अन्त में 'नी' जोड दिया जाता है ।

जैसे :-बाघ-बाघनी, मोर-मोरनी, जाट-जाटनी भील-भीलनी, शेर-शेरनी

* उपनाम और उपजाति शब्दों के अन्तिम शब्दों को 'आइन' हो जाता है।

उदाहरणः- पण्डा - पण्डाइन, लाला - ललाइन.
चौब - चौबाइन, दुबे - दुबाइन.

* संस्कृत के दीर्घ ईकारान्त शब्दों के 'ई' को इनी हो जाता है ।

उदाहरणः- स्वामी - स्वामिनी, अभिमानी - अभिमानिनी
मानी - मानिनी, रोगी - रोगिणी.

* कई शब्दों के अन्तिम स्वर को 'आनी' हो जाता है ।

उदाहरणः- जेठ - जेठानी, देवर-देवरानी, चौधरी - चौधरानी,
खत्री -खत्राणी.

* संस्कृत के अधिकांश 'अ' अन्त वाले शब्दों के 'आ' हो जाता है ।

उदाहरणः- बाल-बाला, प्रिय - प्रिया, सुत-सुता, मूर्ख-मूर्खा.

* 'अक' अन्त वाले शब्दों में 'अक' को 'इका' हो जाता है ।

उदाहरणः- लेखक - लेखिका, अध्यापक - अध्यापिका. गायक-गायिका

* संस्कृत के जिन शब्दों के मूल रुप में, अन्त में, 'अत्' हो और पुंलिंग में 'अत' का 'आन्' हो गाया है, उनके 'आन्' को 'आती' करके स्त्रीलिंग बनाया जाता है ।

उदाहरणः- गुणवान् - गुणावती, श्रीमान-श्रीमती रुपकान् - रुपवती, बुध्दिमान-बुध्दिमती.

अपवादः- विद्वान का स्त्री लिंग 'विदूषी' होता है ।

* संस्कृत के तृ अन्त वाले शब्दों में 'तृ' के स्थान पर 'त्री' हो जाता है -

उदाहरणः- विधाता- विधात्री, जनयिता-जनयित्री.

विशेषः- कवि का भी सत्री लिंग - कवयित्री होता है ।

* कुछ शब्दों के स्त्री लिंग रुप भिन्न होते हैं।

उदाहरणः- पिता - माता, पुरुष - सत्री, नर - नारी, वर - वधू,
ससुर - सास, बैल - गाय, मर्द - औरत.

स्त्री लिंग से पुंलिंग बनाने के नियम

स्त्री लिंग शब्दों के अन्तिम स्वर को आ, उ आ, ओई, पुंलिंग शब्द बनाये जाते हैं ।

उदाहरणः- भैंस - भैंसा, बिल्ली - बिलाव, राँड - रँडुआ
बहन - बहनोई, ताई - ताऊ.

* **अ तथा आ कोई करने से :-**

नर - नारी, दादा - दादी, लडका - लडकी, देव - देवी, घोडा - घोडी, मुर्गा - मुर्गी, हिरन - हिरनी, पुत्र - पुत्री, मेढ़क - मेढ़की, बेटा - बेटी, भतीजा - भतीजी, गधा - गधी. दास - दासी.

* **अ तथा आ को ई या करने से :-**

बुढा - बुढिया, डिब्बा - डिबिया,
चूहा - चूहिया, बेटा - बेटिया.

* **व्यवसायवाचक, जातिवाचक, उपनामवाचक, शब्दों में इन या आइन जोडने से :-**

धोबी - धोबिन, लुहार - लुहारिन, भंगी - भंगिन, तेली - तेलिन, माली - मालिन, कहार - कहारिन, दर्जी - दर्जिन, नाई - नाइन, जुलाहा - जुलाहिन.

* संबंध, जाति तथा उपनाम वाचक शब्दों में आनी जोडने से :-

देवर - देवरानी, क्षत्रिय - क्षत्राणी, नौकर - नौकरानी,
चौधरी - चौधरानी, सेठ - सेठानी, पठान - पठानी

* प्राणीवाचक और जातिवाचक संज्ञाओं में नी जोडने से :-

ऊँट - ऊँटनी, शेर - शोरनी, मोर - मोरनी,
सिंह - सिंहनी, रीछ - रीछनी.

* तत्सम आकारान्त शब्दों में अंत में आ जोडकर ।

बाल - बाला, श्याम - श्यामा प्रिय - प्रिया, सुत - सुता
तनय - तनया, कांत - कांता, तनुज - तनुंजा, पालित - पालिता.

* तत्सम संज्ञा शब्दों में अक का इका करने से :-

लेखक-लेखिका, गायक -गायिका, पाठक-पाठिका, संयोजक- संयोजिका.

* तत्सम शब्दों में ता का स्त्री करने से :

दाता - दात्री, धाता - धात्री

* तत्सम शब्दों में मान और वान का क्रमश :

मती और वती करने से :-

सत्यवान - सत्यवति, भगवान - भगवति

रुपवान - रुपवति, पुत्रवान - पुत्रवती.

आयुष्मान - आयुष्मती, धनवन - धनवती,

बलवान - बलवती, बुध्दिमान - बुध्दिमति

* इनी प्रत्ययों जोडने से :

यशस्वी - यशस्विनी, हाथी - हथिनी, मनोहरी - मनोहारिणी,

स्वामी - स्वामिन, एकाकी - एकाकिनी.

* नित्य पुंलिंग तथा नित्य स्त्री लिगं शब्दों में क्रमशः मादा और नर शब्द जोडने :-

पिता - माता, पुरुष - स्त्री, आदमी - औरत, अध्यक्ष - अध्यक्षा,

पति - पत्नी, बैल - गाय, राजा - रानी, भाई - बहन.

—

Prepared by
B. Ram Mohan
M.A., M.Phil, HPT(Ph.D.)
APSWRS & Jr. College, Pulivendula
YSR Kadapa (Dist)